Jagannath University Research Journal (JURJ)
Volume No.-III, Issue No.–I, April, 2022, ISSN: 2582-6263

अष्टावक्र गीता का सार

Rajani Sharma
Research Scholar
Jagannath University, Jaipur, India

प्रस्तावना

भारत को देवभूमि कहा जाता है इस पर अनेक देवी–देवताओं, योगी, विद्वान महापुरुषों व ऋषि–मुनियों ने जन्म लिया है। इन ऋषियों में एक महान ऋषि हुये है, अष्टावक्र। इन्होंने अष्टावक्र गीता को लिखा जो कि अद्वैत वेदान्त ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ भगवदगीता उपनिषद पुराणों ब्रह्मसूत्र आदि के समान अमूल्य ग्रन्थ है। इसमें ज्ञान वैराग्य मुक्ति जीवन समाधिस्थ योगी आदि दशाओं का विस्तार से वर्णन किया गया। अष्टावक्र ऋषि अपने पिता के श्राप द्वारा 8 अंगों से टेढ़े–मेढ़े पैदा हुए थे किन्तु वे बहुत ही बुद्धिमान थे उन्होंने सम्पूर्ण ग्रन्थों का पार पा लिया था। सत्यवादी अष्टावक्र ने राजा जनक को जीवन का सार्थक अर्थ समझाया गया है। संसार में सभी धर्मों का अपना महत्त्व है तथा सभी मानवता के लिए महनीय है, किन्तु तत्त्वज्ञान की दृष्टि से उपनिषद् अप्रतिम है । उपनिषदों का प्रतिपाद्य एक ही सत् तत्त्व अथवा ब्रह्म है, यद्यपि उनकी कथन शैली भिन्न है, उनमें जगत् जीवन जीवात्मा और आत्मा (परमात्मा) की तात्विक विवेचना तथा मीमांसा है और यत्र तत्र दिव्यानुभूति के उद्‌गार है ।

कीवर्डः महान, अष्टावक्र, संवाद, वक्तव्य, वैराग्य, आत्मा, उपनिषद

1. परिचय

भारत देवभूमि है, जहॉ महान ऋषियों, मुनियों ब्रह्मवेत्ताओं तथा मनीषियों ने जन्म लेकर ज्ञान की ऐसी धारा को प्रवाहित किया जिससे अगणित चिन्तकों को प्रेरणा तथा असंख्य जिज्ञासुजन को अन्तःतृप्ति प्राप्त हुई । यह ज्ञानधारा अपनी महिमा एवं दिव्यता के कारण अजस्र एवं अक्षुष्ण है तथा समस्त मानवता को शक्ति का सन्देश देकर आत्मकल्याण एवं लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है, धन्य है वे कोटि–कोटि जन जो इस अविरल ज्ञानधारा में होते हैं तथा स्वयं आनन्दित होकर अन्यजन को भी आनन्दित कर देते है इन्होंने अष्टावक्र गीता को लिखा जो कि अद्वैत वेदान्त ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ भगवदगीता उपनिषद पुराणों ब्रह्मसूत्र आदि के समान अमूल्य ग्रन्थ है। इसमें ज्ञान वैराग्य मुक्ति जीवन समाधिस्थ योगी आदि दशाओं का विस्तार से वर्णन किया गया। संसार में सभी धर्मों का अपना महत्त्व है तथा सभी मानवता के लिए महनीय है, किन्तु तत्त्वज्ञान की दृष्टि से उपनिषद् अप्रतिम है । उपनिषदों का प्रतिपाद्य एक ही सत् तत्त्व अथवा ब्रह्म है, यद्यपि उनकी कथन शैली भिन्न है, उनमें जगत् जीवन जीवात्मा और आत्मा (परमात्मा) की तात्विक विवेचना तथा मीमांसा है और यत्र तत्र दिव्यानुभूति के उद्‌गार है। उपनिषदों की पुनः पुनः घोषणा है कि संपूर्ण अस्तित्व चिन्मय है तथा जड़ तत्व में भी चेतन तत्व सूक्ष्मतः व्याप्त है। ब्रह्म ही जीवन का उद्‌गम एवं आधार है।

2. ऋषि संवाद

अष्टावक्र महागीता में भी गीता की तरह गुरू शिष्य के बीच वार्तालाप है। लेकिन दोनों के सन्दर्भो में अन्तर है, अर्जुन के प्रश्न कर्त्तव्य को लेकर है, वह पाप–पुण्य, स्वर्ग–नरक कर्म–अकर्म में उलझा है, जबकि इस महागीता में प्रश्न तत्त्वज्ञान और मोक्ष को लेकर पूछा गया है । गुरू के बिना किसी लाग–लपेट, निश्चलता के साथ अनायास ही जनक को ज्ञान का सत्पात्र जानकर तत्व ज्ञान दे दिया है और आश्चर्य है कि जिज्ञासु को दिया गया ज्ञान एकदम अनायास प्रतिफलित हुआ। शिष्य को दिया गया ज्ञान अनायास प्रतिफलित हुआ। शिष्य को आत्म साक्षात्कार हो गया। श्रीमद्‌भगवत् गीता को सुन अर्जुन अपने कर्त्तव्य पर तो आरूढ हो गया। लेकिन हर्ष–विषाद में चढ़ता उतरता रहा । जबकि यहॉ अष्टावक्र के उपदेश को सुनकर जनक विदेह हो गये । श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि जनकादि की तरह तू भी स्वयं में स्थित होकर सहज कार्य कर यह राजर्षि जनक गीता का आदर्श है । राजर्षि जनक को अष्टावक्र ने तत्त्वबोध करवाया। यह अष्टावक्र गीता उन जनक और महर्षि अष्टावक्र के बीच हुए आध्यात्मिक संवाद को अपने पृष्ठों में समेटें है

Copyright © JURJ

। इसकी इसी गरिमा को सामने रखते हुए हम इस पावन ग्रन्थ को महागीता कहते है । अनेक स्थलों पर दुरूह प्रतीत होते हुए भी इसका तत्वार्थ स्पष्ट है । यद्यपि जिस गंभीर अध्येता ने उपनिषदों का गहन स्वाध्याय किया हो, वह इसका पूर्ण रसास्वादन कर सकता है, तथापि जिज्ञासु एवं श्रदालु व्यक्ति के लिए यह अवश्य ही सुगम एवं सुरूचिपूर्ण है । जिज्ञासा और श्रद्धा से तीव्र उत्सुकता उत्पन्न हो जाती है तथा मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रवृत्त हो जाता है । अष्टावक्र, उद्धालक मुनि के पुत्री सुजाता के पुत्र थे । सुजाता का विवाह कहोड़ ऋषि से हुआ था जो कि वेदों के प्रकांड ज्ञाता थे । जब अष्टावक्र माँ के गर्भ में थे तभी उन्हें पिता के द्वारा श्राप मिला जिसके फलस्वरूप वे आठ जगह से वक्र (टेड़ा) शरीर लेकर संसार में आये । अष्टावक्र ज्ञानी, बह्मज्ञ थे उन्होने अल्प–आयु में ही जनक जैसे राजा को आत्मज्ञान की शिक्षा देकर ब्रह्मदानी बनाया । एक बार अष्टाव्रक जब आठ स्थानों से वक्र शरीर से सभा में पहुँचे तो उनकी आकृति व चाल ढ़ाल देखकर सभी सभासद हंसने लगे । थोड़ी देर रूकने के बाद अष्टावक्र भी उन समासदों को देखकर जोर से हँसे। उनकी हंसी देखकर राजा जनक ने उनसे पूछा कि ये विद्वान क्यों हँसे यह तो मे समझ गया किन्तु तुम क्यों हँसे ? यह मेरी समझ में नहीं आया । अष्टावक्र ने कहा कि मैं इसलिए हँसा कि इन चर्मकारों की सभा में आज सत्य का निर्णय हो रहा है । चर्मकार चमड़ी का पारखी होता है वह ज्ञान को क्या समझे ? ज्ञानी ज्ञान को देखता है, चमड़ी को नही।

हे राजन् । ज्ञानवान की आत्मदृष्टि रहती है, वह आत्मा को ही देखता है और अज्ञानी की चर्मदृष्टि रहती है । वह चमड़ी को ही देखता है । अष्टावक्र के वचनों को सुनकर जनक बहुत प्रभावित हुए । वे उनके चरणों में गिर पड़े । षष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया व उन्हें ज्ञान का उपदेश देने हेतु अपने महल में आमंत्रित किया ।

दूसरे दिन अष्टावक्र वहा पंहुचे तो उन्हें सिंहासन पर बैठाया । स्वयं जनक उनके चरणों में बैठे व शिष्य भाव से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान बारह वर्ष के बालक अष्टावक्र से करवाया । यही शंका समाधान अष्टावक्र गीता ''जनक अष्टावक्र संवाद'' रूप में वर्णित है ।

3. अष्टावक्र की उत्पत्ति

अष्टावक्र गीता का प्रारम्भ राजा जनक द्वारा पूछे गए तीन प्रश्नों पर आधारित है।

(1) ज्ञान कैसे प्राप्त होता है?
(2) मुक्ति कैसे होगी ?
(3) वैराग्य कैसे प्राप्त होगा?

ये तीनों प्रश्न शाश्वत प्रश्न है जो हर समय में आत्मानुसंधानियों द्वारा पूछे जाते है। राजा जनक के इन तीन प्रश्नों में अनेक प्रश्न जुड़े हुए है जिनका समाधान अष्टावक्र ने बहुत ही सहजता व सरलता के साथ प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा समझाया है। सत्यवादी अष्टावक्र ने राजा जनक को जीवन का सार्थक अर्थ समझाया गया है।

4. उद्देश्य

किसी समस्या के अध्ययन से पूर्व उसके उद्देश्य की स्पष्टता अनिवार्य हे बिना उद्देश्य की स्पष्टता के समस्या का अध्ययन करना न तो संभव है और न ही कोई सार्थकता रखता है इस समस्या के अध्ययन के विभिन्न उद्देश्य निश्चित किये गये हैं।

1. अष्टावक्र महागीता का अध्ययन करना।

2. अष्टावक्र महागीता में निहित शैक्षिक निहितार्थों का अध्ययन करना।

3. अष्टावक्र में स्थित आत्मस्वरूप का अध्ययन करना।

4. अष्टावक्र गीता में निहित सतगुरू के स्वरूप का अध्ययन करना।

5. अष्टावक्र गीता में निहित ज्ञानी व अज्ञानी के स्वरूप का अध्ययन करना।

6. अष्टावक्र में निहित आत्मज्ञानी के व्यवहार का अध्ययन करना।

7. अष्टावक्र में निहित शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

5. उपसंहार/निष्कर्ष

इस ग्रन्थ में आत्मज्ञान के वक्तव्य को सहज व सरल रुप में ज्ञान मार्ग द्वारा समझाया है। इसमें बताया गया है कि सभी प्रकार के विषयों को विष की तरह त्याग देना चाहिए और क्षमा सरलता दया

Copyright © JURJ
http://jagannathuniversity.org/jurj

संतोष व सत्य का अमृत की तरह सेवन करना चाहिए। क्योंकि विषय हमेशा मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देते वे मनुष्य को नर्क की ओर ही धकेलते है। परमपिता परमाप्त साकार रुप है वहीं मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ बनाता है और मुक्ति दिलाता है। वह परमात्मा कण–कण में निवास करता है अतः विषय विकारों को त्याग कर मन निर्मल करके उस परमात्मा का भजन करो जो हमें जन्म–मरण के बंधन से मुक्त कर दे। अष्टावक्र महागीता एक वृहद् ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में अनेक विषयों पर गंभीर चिन्तन किया गया है इसलिए शोध विषय का क्षैत्र निर्धारित करना आवश्यक है अतः शोध के क्षेत्र को 'आत्म–परिचय', 'सतगुरूमहत्व', ज्ञानी व अज्ञानी में अन्तर, आत्मज्ञानी के व्यवहार, तथा निष्काम कर्म योग इन बिन्दुओं पर अध्ययन से परिसीमित किया जाएगा ।

सदर्भ सूची

1. ''संग्रहीत प्रति'' मूल से 8 सितम्बर 2009 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 24 अगस्त 2009

2. ''संग्रहीत प्रति'' मूल से 4 सितम्बर 2017 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 4 सितंबर 2017

3. आचार्य, एस.आर और शर्मा, बी.डी. (संपा.) (2010), 108 उपनिषद, ज्ञान कांड, मथुरा।

4. गायत्री तपोभूमिः उगा निर्माण योजना बिस्तर ट्रस्ट।

5. बैरोन, टी और आइजनर, ई. डब्ल्यू. (2012), कला आधारित शैक्षिक अनुसंधान, लांस एंजिल्स।

6. बार्टले, सी. (2011) भारतीय दर्शन का परिचय, लंदनः सातत्य।

7. गुप्ता, एस.डी. (1922), भारतीय दर्शन का इतिहास (खण्ड–प्रथम), नई दिल्ली, कैम्ब्रिज।

1. लेखक की जीवनी

रजनी शर्मा पत्नी श्री धर्मराज शर्मा का जन्म 05–06–1984 को हुआ था। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से एम.एड (मास्टर ऑफ एजुकेशन) वर्ष 2018 में पूरा किया एव जगतगुरू रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से वर्ष 2008 में बी.एड. पूर्ण की। वर्धमान खुला विश्वविद्यालय, कोटा से एम.ए. (संस्कृत) वर्ष 2019 में पूर्ण किया। वह स्टैनी मेमोरियल पब्लिक स्कूल, फागी, जयपुर में चार वर्ष कार्यरत रही एवं इसके पश्चात् स्टैनी मेमोरियल बी.एड. कॉलेज में व्याख्याता पद पर अगस्त, 2019 से दिसम्बर, 2019 तक कार्यरत रही। वर्तमान में जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर से पीएचडी की शिक्षा प्राप्त कर रही है एवं जगन्नाथ विश्वविद्यालय में सहायक व्याख्याता के पद पर कार्यरत है।

2. लेखक

डॉ. अंकुश शर्मा
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)